डायट बुलेटिन

वाल्यूम – (I) संस्करण – (I)

"ज्ञान भारतम् मिशन" पर उद्बोधनः श्री मनोज कुमार

बरेली। जिला शिक्षा एवं प्रशिक्षण संस्थान, फरीदपुर, बरेली मे श्री मनोज कुमार, वरिष्ठ प्रवक्ता द्वारा "ज्ञान भारतम मिशन" के सम्बन्ध में बताया गया कि यह भारत सरकार द्वारा चलाया जा द्वारा चलाया जा रहा मिशन है जिसमें हम भारत में समृद्ध पांडुलिपियों आदि का संग्रह कर सकते है ज्ञान भारतम् मिशन भारत की प्राचीन पांडुलिपियों को डिजिटल रूप से संरक्षित और प्रलेखित करने के लिए संस्कृत मंत्रालय द्वारा शुरू की गई एक राष्ट्रीय पहल है। 2025–26 के बजट में घोषित, यह मिशन (2024–31) के लिए ₹482.85 करोड़ के आवंटन के साथ 1 करोड़ से अधिक पांडुलिपियों को स्केन, डिजिटाइज और संरक्षित करेगा। यह पुरानी विरासत को आधुनिक तकनीक से जोड़कर भावी पीढ़ियों के लिए सुरक्षित रखेगा। वरिष्ठ

- संग्रह का मुख्य केंद्र पुस्तकालय, संग्रहालय, शिक्षण संस्थान, शोध संस्थान, संस्कृत पाठशाला, मंदिर, मठ, आश्रम, गुरूकुल, ट्रस्ट आदि हो सकते है इसी प्रकार निजी संग्राहकों जैसे पुरोहित, धर्माचार्य, ज्योतिषाचार्य, आयुर्वेदाचार्य, संस्कृत एवं प्राचीन भाषाओं के विद्वान आदि के पास भी पांडुलिपियों का संग्रह हो सकता है
- सर्वेक्षण कार्य पांडुलिपियों संग्रह केंद्र के प्रभारी की सहमति प्राप्त कर ही करना है ।

प्रवक्ता द्वारा प्रशिक्षुओं को बताया गया आप इस मिशन का हिस्सा बन सकते है । इसके लिए इनाम भी रखा गया है।

जनगणना के सम्बन्ध में महत्वपूर्ण प्रशिक्षण

बरेली। दिनांक 04.05.2026 को डायट परिसर में जनगणना 2027 के सम्बन्ध में एक महत्वपूर्ण प्रशिक्षण दिया। इसका आयोजन मुख्य वक्ता श्री श्रीकांत मिश्रा द्वारा किया गया । आगामी जनगणना की रूपरेखा और इसके डिजिटल स्वरूप के बारे में विस्तार से जानकारी दी। इस दौरान प्रवक्ता डॉ0 नीति माहौर, प्रवक्ता डॉ फेहमीना, प्रवक्ता श्री दिनेश कुमार गरिमामयी रूप से उपस्थित रहें।

मुख्य बिन्दुः

1. **प्रथम बार स्व–गणना**
2. **मकानसूचीकरण एवं मकानों की गणना**
3. **जनसंख्या की गणना**

इस डिजिटल जनगणना के अर्न्तत नागरिको से कुल 34 प्रश्न के उत्तर पूछे जाएंगे।

प्राचार्य का संदेश

डायट प्राचार्य श्रीमती दीप्ति वार्ष्णेय का बुलेटिन से जुड़े सभी समर्पित सदस्यों को हार्दिक बधाई।

बरेली। अत्यंत हर्ष का विषय है कि हमारे जिला शिक्षा एवं प्रशिक्षण संस्थान (DIET), बरेली द्वारा डिजिटल नवाचार की दिशा में एक और सराहनीय कदम बढ़ाते हुए मासिक ई–न्यूजपेपर का प्रकाशन प्रारंभ किया जा रहा है इस नवप्रयास के लिए मै बुलेटिन से जुड़े सभी समर्पित सदस्यों को हार्दिक बधाई देती हूँ। आज का युग सूचना प्रौद्योगिकी और डिजिटल क्रांति का युग है। ऐसे समय में शिक्षा के क्षेत्र में हो रहे नए प्रयोगों, नवाचारों, विभागीय दिशा–निर्देशों और शिक्षकों व प्रशिक्षुओं की रचनात्मक प्रतिभा को एक डिजिटल मंच देना समय की मांग भी है और एक बहतरीन पहल भी। मुझे पूर्ण विश्वास है कि यह मासिक ई–न्यूजपेपर ज्ञान के प्रसार, रचनात्मक लेखन को बढ़ावा देने और शिक्षा जगत की सकारात्मक खबरों को हम तक पहुंचाना में मील का पत्थर साबित होगा। मैं इस पत्रिका के निरंतर, सफल और उद्देश्यपूर्ण प्रकाशन के लिए पूरी टीम को अपनी हार्दिक शुभकामनाएं प्रेषित करती हूँ और उसके उज्जवल भविष्य की कामना करती हूँ।

प्राचार्य
डायट, बरेली

लोकतांत्रिक प्रकिया के तहत सेक्शन अ के कक्षा प्रतिनिधि का चयन

बरेली। कक्षा अध्यापक श्री श्रीकांत मिश्रा और प्रवक्ता श्री दिनेश कुमार सिंह की उपस्थिति में सेक्शन अ में लोकतांत्रिक प्रकिया द्वारा कक्षा प्रतिनिधि का चुनाव सम्पन्न हुआ।

जिसके परिणाम की घोषणा के उपरान्त श्री अनुज कुमार सिंह एवं कुमारी कृतिका तिवारी को कक्षा प्रतिनिधि निर्वाचित किया गया तथा द्वितीय स्थान पर अनमोल गंगवार और मीनू बोरा को सह–कक्षा प्रतिनिधि निर्वाचित किया गया।

उपस्थित नामांकन करने बाले प्रशिक्षु।

मतगणना विवरण :–

1. **अनुज कुमार सिंह – 12 मत**
2. **कृतिका तिवारी – 11 मत**
3. **अनमोल गंगवार – 11 मत**
4. **मीनू बोरा – 10 मत**
5. **अनु तोमर – 8 मत**
6. **अरबाब रजा खां – 6 मत**

वरिष्ठ प्रवक्ता का संदेश

बरेली। मुझे यह जानकर प्रसन्नता है कि संस्थान की मासिक बुलेटिन का प्रकाशन प्रारंभ किया जा रहा है। यह बुलेटिन हमारे संस्थान की गतिविधियों, उपलब्धियों, नवाचारों तथा प्रशिक्षुओं की रचनात्मक अभिव्यक्तियों को साझा करने का एक महत्वपूर्ण माध्यम बनेगी। मेरा विश्वास है कि यह प्रयास सभी प्रशिक्षुओं में लेखन, चिंतन और रचनात्मकता को प्रोत्साहित करेगा तथा संस्थान में हो रहे उत्कृष्ट कार्यों को व्यापक मंच प्रदान करेगा।

मैं बुलेटिन के प्रकाशन से जुड़े सभी प्रशिक्षुओं एवं संपादकीय दल को शुभकामनाएँ देता हूँ और आशा करता हूँ कि यह पहल निरंतर प्रगति करती रहेगी।

(मनोज कुमार)
वरिष्ठ प्रवक्ता, डायट

माननीय मुख्यमंत्री योगी जी के विशेष कार्यक्रम का लाइव प्रसारण

बरेली। डायट परिसर में प्रदेश के मुख्यमंत्री श्री योगी आदित्यनाथ जी के विशेष कार्यक्रम का लाइव प्रसारण अत्यंत उत्साह के साथ किया गया। जिलाधिकारी महोदय के निर्देशों के अनुपालन में आयोजित इस कार्यक्रम का मुख्य केंद्र बिन्दु शिक्षामित्रों के मानदेय में की गई वृद्धि और शिक्षा विभाग की नई उपलब्धियां रही।

कार्यक्रम की मुख्य विशेषताएंः

1. **मानदेय में बढोत्तरी**
2. **जिलाधिकारी महोदय के आदेश का अनुपालन**
3. **गणमान्य उपस्थिति**

"सरकार का यह कदम न केवल शिक्षामित्रों का मनोबल बढ़ाएगा, बल्कि शिक्षा व्यवस्था को और अधिक सुदृढ़ करने में सहायक सिद्ध होगा।"

डीएलएड 2026 के लिए 15 जून से शुरू होंगे ऑनलाइन आवेदन

सचिव परीक्षा नियामक प्राधिकारी ने शासन को समय-सारणी जारी करने का भेजा था प्रस्ताव

प्रयागराज। डीएलएड प्रशिक्षण 2026 के लिए ऑनलाइन आवेदन काउंसलिंग एव चयन–प्रवेश प्रकिया की समय सारिणी शासन ने जारी कर दी है। इस संबंध में विशेष सचिव यतींद्र कुमान ने शुक्रवार को निर्देश जारी किए। इससे पहले सचिव परीक्षा नियामक प्राधिकरण ने 15 मई को शासन को समय–सारिणी जारी करने का प्रस्ताव भेजा था।

सचिव परीक्षा नियामक प्राधिकारी अनिल भूषण चतुर्वेदी के अनुसार, 10 जून को एकीकृत पोर्टल के माध्यम से विज्ञापन प्रकाशित किया जाएगा। ऑनलाइल पंजीकरण 15 जून से शुरू होकर 8 जुलाई तक चलेगा। आवेदन शुल्क जमा करने की अंतिम तिथि 9 जुलाई निर्धारित की गई है। अभ्यर्थियों की स्टेट रैंक 16 जुलाई को जारी होगी मेरिट के आधार पर राजकीय एवं निजी संस्थानों में सीट आवंटन के लिए प्रथम चरण की काउंसलिंग 20 जुलाई से 10 अगस्त तक आयोजित होगी। सभी चरणों की काउंसलिंग एवं प्रवेश प्रकिया पूर्ण होने के बाद डीएलएड प्रशिक्षु सत्र 2026–28 का शुभारंभ 14 सितंबर से होगा।

शिक्षा व्यवस्था में व्यापक परिवर्तन ला रहा आर्टिफिशियल इंटेलीजेंस

डायट में कृत्रिम बुद्धिमत्ता विषय पर विशेष सत्र किया आयोजित

बरेली। जिला शिक्षा एवं प्रशिक्षण संस्थान (डायट) में कृत्रिम बुद्धिमत्ता (आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस-एआई) विषय पर एक विशेष सत्र का आयोजन प्राचार्या दीप्ति वार्ष्णेय के मार्गदर्शन में किया गया। कार्यक्रम का उद्देश्य शिक्षकों एवं प्रशिक्षुओं को शिक्षा के क्षेत्र में एआई की उपयोगिता, संभावनाओं तथा चुनौतियों से अवगत कराना रहा। विशेष वक्ता के रूप में फ्यूचर यूनिवर्सिटी के कंप्यूटर साइंस विभाग से असिस्टेंट प्रोफेसर डा. जिलानी तथा शिक्षा विभाग से असिस्टेंट प्रोफेसर, डा. त्रिवेंद्र शर्मा उपस्थित रहे। इसके अलावा संस्थान के प्रवक्ता डा. कृष्ण कुमार, डा. फहमीना, श्रीमती ममता, श्री दिनेश कुमार सिंह व श्री विनोद कुमार ने भी एआई की वर्तमान उपयोगिता और उससे जुड़ी चुनौतियों पर अपने विचार रखे। वक्ताओं ने बताया कि वर्तमान समय में एआई शिक्षा व्यवस्था में व्यापक परिवर्तन ला रहा है। इसके माध्यम से व्यक्तिगत शिक्षण, शिक्षण सामग्री निर्माण, मूल्यांकन प्रक्रिया तथा विद्यार्थियों की सीखने की गति के अनुरूप से शिक्षण को अधिक प्रभावी बनाया जा सकता है। प्रतिभागियों को एआई आधारित विभिन्न डिजिटल टूल्स का

कार्यक्रम में मौजूद मुख्य वक्ता व डायट प्रवक्ता ।

व्यावहारिक प्रदर्शन भी कराया गया। कार्यक्रम के दौरान इस बात पर भी जोर दिया गया कि एआई का उपयोग शिक्षकों के स्थान पर नहीं, बल्कि शिक्षण प्रक्रिया को अधिक रचनात्मक, प्रभावी और छात्र केंद्रित बनाने के लिए किया जाना चाहिए। साथ ही एआई के उपयोग में नैतिकता, डेटा सुरक्षा और मानवीय मूल्यों के संरक्षण को भी आवश्यक बताया गया।

प्रवक्ता डा. कृष्ण कुमार ने कहा कि नई शिक्षा नीति 2020 के अनुरूप शिक्षकों को आधुनिक तकनीकों से दक्ष बनाना समय की मांग है और एआई आधारित नवाचार शिक्षा की गुणवत्ता सुधारने में महत्वपूर्ण भूमिका निभा सकते हैं। प्रवक्ता श्री दिनेश कुमार सिंह ने आभार व्यक्त करते हुए प्रतिभागियों को शिक्षा में तकनीकी नवाचारों के प्रभावी उपयोग हेतु निरंतर सीखने के लिए प्रेरित किया।

"एक प्रशिक्षु – एक प्रवेश": अभियान

बरेली। जिला शिक्षा एवं प्रशिक्षण संस्थान (DIET) फरीदपुर के शैक्षणिक सत्र 2024-26 के समस्त डी.एल.एड. (D.El.Ed) प्रशिक्षुओं को 'एक प्रशिक्षु - एक प्रवेश' अभियान के अंतर्गत महत्वपूर्ण दिशा-निर्देश जारी किए गए हैं। संस्थान के वरिष्ठ प्रवक्ता श्री मनोज कुमार के निर्देशों के अनुपालन में इस अभियान को गति दी जा रही है।

इस अभियान का मुख्य उद्देश्य समाज के 'आउट ऑफ स्कूल' (Out of School) बच्चों का चिन्हांकन कर उन्हें शिक्षा की मुख्यधारा से जोड़ना और निकटतम सरकारी विद्यालय में उनका शत-प्रतिशत प्रवेश सुनिश्चित कराना है।

स्त्रोत ए–आई जैमिनी।

संस्थान द्वारा सभी प्रशिक्षुओं के लिए निम्नलिखित कड़े निर्देश जारी किए गए हैं:

अनिवार्य प्रवेश प्रक्रिया: प्रत्येक प्रशिक्षु के लिए अपने आस-पास के 'आउट ऑफ स्कूल' बच्चों के प्रवेश संबंधी कार्यवाही को अनिवार्य रूप से पूर्ण करना आवश्यक है। इसके लिए प्रशिक्षु अपने नजदीकी किसी भी सरकारी विद्यालय या बेसिक शिक्षा के अध्यापक से संपर्क कर सहयोग ले सकते हैं।

डायट सभागार में बाल विकास से सम्बन्धित प्रेजेंटेशन

बरेली। जिला शिक्षा एवं प्रशिक्षण संस्थान (डायट) फरीदपुर, बरेली में डॉ० फ़हमीना (प्रवक्ता) के कुशल मार्गदर्शन में प्रशिक्षुओं के लिए प्रेजेंटेशन का सफल आयोजन किया गया। इसका मुख्य उद्देश्य प्रशिक्षुओं के शिक्षण कौशल और आत्मविश्वास को बढ़ावा देना था।

प्रतियोगिता को सुचारू रूप से चलाने के लिए दो दिन पूर्व ही डॉ० फहमीना ने सभी प्रशिक्षुओं को मिलाकर कुल 10 ग्रुप तैयार किए , जिसमें औसतन 10-10 प्रशिक्षु शामिल रहे। ग्रुप के सदस्यों की आपसी सहमति से प्रत्येक ग्रुप में एक 'ग्रुप लीडर' का चुनाव किया गया। इसके बाद सभी ग्रुप्स को अलग-अलग रोचक और ज्ञानवर्धक टॉपिक्स (बाल विकास से सम्बंधित) अवंटित किए गए। प्रशिक्षुओं को अपनी प्रस्तुति (Presentation) के लिए पीपीटी (PPT), व्हाइट बोर्ड (White Board) और पोस्टर जैसे विभिन्न माध्यमों (Modes) को चुनने की स्वतंत्रता दी गई।

प्रस्तुतीकरण (Presentation) के मुख्य दिशा-निर्देश बताए गए :

प्रवक्ता द्वारा प्रेजेंटेशन को प्रभावी बनाने के लिए कुछ कड़े और स्पष्ट निर्देश दिए गए थे, जिनका पालन सभी ग्रुप्स को करना अनिवार्य था:

प्रेजेंटेशन देते प्रशिक्षु ।

1. **आवंटित विषय/टॉपिक का स्पष्ट अर्थ।**
2. **विकास के विभिन्न चरण।**
3. **याद रखने योग्य महत्वपूर्ण बिंदु (Key Points)।**
4. **संदर्भ (References)।**
5. **समय सीमा (8 से 10 मिनट)।**
6. **पूर्व ज्ञान पर आधारित प्रश्न (Introductory Questions)।**
7. **विषय से संबंधित मूल्यांकन प्रश्न (Evaluation Questions)।**

इस Presentation का कुशल संचालन डॉ० फ़हमीना के मार्गदर्शन में प्रशिक्षु अरबाब और अनुज द्वारा किया गया। प्रेजेंटेशन के प्रारम्भ में प्रवक्ता ने सभी ग्रुप को स्व मूल्यांकन एवं अन्य ग्रुप के मूल्यांकन हेतु 15 नंबर निर्धारित किये जिसके द्वारा देखा जा सके किस ग्रुप का Presentation सबसे बेहतर रहा।

कार्यक्रम की सबसे खास बात यह रही कि प्रत्येक ग्रुप की प्रस्तुति (Presentation) समाप्त होने के तुरंत बाद डॉ० फ़हमीना ने सभी को फीडबैक दिया। उन्होंने प्रशिक्षुओं की सराहना करने के साथ-साथ यह भी मार्गदर्शन किया कि भविष्य में वे अपनी प्रस्तुति (Presentation) और शिक्षण शैली में क्या-क्या सुधार कर सकते हैं, ताकि वे आगामी समय में एक कुशल और 'भावी शिक्षक' बन सकें।

कविताएँ/लेख

डीएलएड प्रशिक्षु द्वारा लिखी गई कविताएँ/लेख या उनके द्वारा बनाए गए चित्र/खींची गई फोटो।

गोकुल को पावन माटी में प्रकृति का नृत्यः अनु तोमर

फोटोग्राफी अनु तोमर

मथुरा। मथुरा के पास गोकुल में यमुना तट पर स्थित 'रमन रेती हिरण पार्क' अध्यात्म और प्रकृति के अद्भुत मिलन का प्रतीक है। धार्मिक मान्यताओं के अनुसार, इस पवित्र रेतीली भूमि पर भगवान श्री कृष्ण अपने सखाओं और गैयाओं के साथ बाल–लीलाएं किया करते थे। तस्वीर में दिख रहा यह हिरण उसी द्वापर युग की सादगी और निश्छलता को जीवंत करता है । यह तस्वीर ब्रज की समृद्ध प्राकृतिक धरोहर और जीवों के प्रति प्रेम को बखूबी दर्शाती है।

पहचान बन जाए
रानी यादव डीएलएड 2025

काम करो ऐसा कि एक

पहचान बन जाए।

हर कदम चलो ऐसे,

कि निशान बन जाए।

यहां जिंदगी तो हर कोई

काट लेता है।

जिंदगी जियो इस कदर

कि मिसाल बन जाए।

उस घर से हमको चिढ़ थी जिस घर, हरदम हमें आराम मिला
शिवम यादव डीएलएड 2025

उस घर से हमको चिढ़ थी जिस घर
हरदम हमें आराम मिला...
उस राह से हमको घिन थी जिस पर
हरदम हमें सलाम मिला...

उस भरे मदरसे से थक बैठे
हरदम जहां इनाम मिला...
उस दुकां पे जाना भूल गए
जिस पे सामां बिन दाम मिला...

हम नहीं हाथ को मिला सके
जब मुस्काता शैतान मिला...
और खुलेआम यूं झूम उठे
जब पहला वो इन्सान मिला...

फिर आज तलक ना समझ सके
कि क्योंकर आखिर उसी रोज़
वो शहर छोड़ के जाने का
हम को रूखा ऐलान मिला...

कदम–कदम पे मुश्किल होगी
अंजुम बी डीएलएड 2025

कदम कदम पर मुश्किल होगी,
राह कभी आसान न होगी ।
पर जो मेहनत से पड़ता है,
उसकी पहचान बड़ी होगी।

ज्ञानदीप जब जलता है,
अंधियारा खुद ढलता है।
शिक्षा में बहुत ताकत है दोस्तों,
जो इंसान को बदलता है।

किताबों में सपने बसते,
मेहनत से अपने बनते।
जो आज पढ़ाई कर लेता,
कल उसके झंडा लहराते।

ना डर असफलता से कभी,
हर ठोकर देती है सीख नई।
शिक्षा ही शिक्षा ही वह सीढ़ी है,
जो ले जाए मंजिल सही।

इसलिए मन में ठान लो,
हर दिन कुछ नया जान लो।
ज्ञान से बड़ा धन नहीं,
यह बात हमेशा मान लो।

प्यारा हिन्दुस्तान
शाहनूर डीएलएड 2025

ऐ मेरे जान से प्यारे हिन्दोस्तान,
तेरा मयार सब से आला तू इंसानियत की जान।

बुलंदी से है तेरी चेहरों पर मुस्कान,
तू सलामत रहे दिल में है ये अरमान।

हैं जहां में मुल्क और भी मगर,
तू निराला है सब से आला तेरी शान।

गर आए तुझ पर कोई आंच,
निसार कर दूँ तुझ पर अपनी जान।

तेरे दामन में हीरे मोती जड़े,
उजाड़ने को तेरा चमन बहुत हैं लड़े।

तेरे बागों में सब्ज़ शजर हैं खड़े,
है दुआ दुश्मनों की नज़र न इस पर पड़े।

तेरे आशियाने तले रंग बिरंगे गुल हैं खिले,
तेरे साये में छाँव माँ सी मिले।

तेरी कोख में गंगा जमुना पलें,
हर सिम्त नयी नयी जुबानें मिलें।

कभी जश्न ए ईद कभी जश्न ए होली,
वो नदी का किनारा वो कोयल की बोली।

तेरी पस्ती पे रोता है दिल,
चैन ओ सुकूँ सब खोता है दिल।

सदा आलम में तेरा बोल बाला रहे,
तू मुल्कों में सब से आला रहे।

ऐ मेरे जान से प्यारे हिन्दोस्तान,
तेरा मयार सब से आला तू इंसानियत की जान।

नया सवेरा, नई उड़ान
आदर्श शर्मा डीएलएड 2025

क्षितिज पर देखो चमक रहा,
फिर एक नया अंगारा है।
कल की बातें कल की थीं,
अब आज का खेल हमारा है।
रातों के गहरे साए से,
हम लड़कर आगे आए हैं।
निराशा के सब जालों को,
हम खुद ही तोड़कर आए हैं।
चलो कि अब कुछ ऐसा कर दें,
जो खुद को भी हैरान करे।
कमजोर न समझे कोई हमें,
तूफानों का रुख मोड़ चलें।
यह महीना है नई उम्मीदों का,
कुछ नए ख्वाब सजाने का।
जो छूट गया उसे भूलकर,
मंजिल की तरफ कदम बढ़ाने का।
उठो, बढ़ो और छू लो नभ को,
अब रुकने का कोई काम नहीं।
जब तक मंजिल मिल न जाए,
तब तक पथिक को आराम नहीं।

डीएलएड प्रशिक्षु द्वारा लिखे गए लेख या उनके द्वारा बनाए गए चित्र/खीची गई फोटो।

"आखिरी दर्शन जरूरी क्यों"

दर्शन की उत्पत्ति हम 2500 साल पहले 'सुकरात' से जोड़ सकते हैं, जो होमो सेपियंस के इतिहास में बहुत हाल की बात है। यह वह दौर था जब मनुष्य 'हम ऐसा इसलिए करते हैं', क्योंकि यह हमेशा से इसी तरह किया जाता रहा है, देवताओं ने हमें इसी तरह करने को कहा है, तुम्हारे बुजुर्गों ने इसी तरह किया है, इसलिए यह ऐसा ही है और अगर तुम इस तरह नहीं करोगे तो देवता तुम्हें दंडित करेंगे से बदलकर एक सक्रिय, सचेतन तर्कसंगत सोच में बदल गया जैसे- क्यों?' 'ऐसा क्यों?' 'क्या यह सही है? और यह मानव इतिहास का एक क्रांतिकारी क्षण था...... सुकरात ज्यादा समय तक जीवित नहीं रह सके जब उन्होंने इस तरह के सवाल करने शुरू किए तब उन्हें मौत की सजा सुनायी गयी।

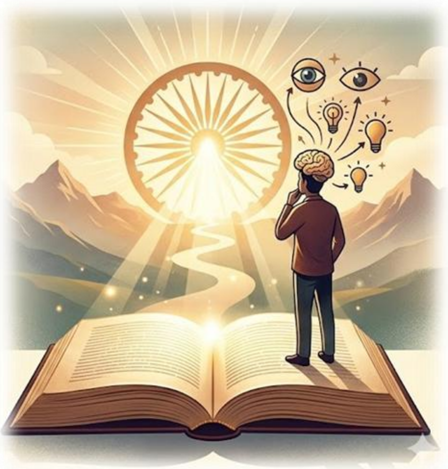

दर्शन हर चीज़ में समाया हुआ है। हम सभी के अपने दर्शन होते हैं जो हमारी प्रेरणाओं और दैनिक कार्यों का आधार बनते हैं। हर किसी का अपना जीवन दर्शन होता है। 'डोनाल्ड ट्रंप का एक दर्शन है, 'एलन मस्क' का मी दर्शन होगा, 'बिल गेट्स' का एक दर्शन होगा, आपके आस-पास में भी किसी न किसी का कोई दर्शन होगा लेकिन हममें से ज्यादातर लोगों के लिए, ये दर्शन बिना चुने, जाँचे-परखे स्वतः स्फूर्त और सहज होते हैं। प्राचीन दर्शन में मेरी रुचि के कारण, मुझे यह विचार बहुत पसंद है कि प्रशिक्षण संस्थान लोगों को अपना दर्शन निर्धारित करने व अपने जीवन का लक्ष्य निर्धारित करने का स्थान हो सकता है। कोई भी केंद्र बालक की उन्नति में चाहें अपितु शिक्षा का वह किसी भी क्षेत्र में हो परम आवश्यक है।

हिमानी
डीएलएड 2025

तब दुनिया सुन्दर कहलाएगी

भूख कही चौखट पर बैठे
नींद भला फिर कैसी हो।
दर्द अगर सड़को पर बिखरे,
खामोशी फिर कैसी हो।

न सोने से देश चमकता,
न ऊँचे बाजारों से।
देश तो रोशन होता है,
मेहनतकश के हाथों से।

जिस बच्चे ने कलम उठाई हो,
वो हाथ ना बोझ उठाएँ फिर।
हर बेटी खुलकर सपने देखे,
कोई सपना टूट न जाए फिर।

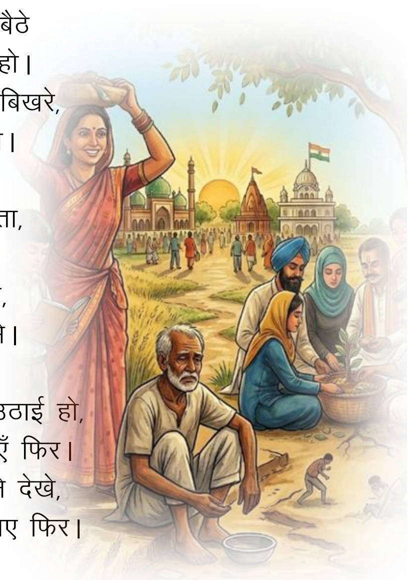

मिट्टी का रंग अलग सही,
पर सबकी धड़कन एक यहाँ।
समानता का अर्थ यही है,
सबका अपना नेक जहाँ।

कोई धर्म बड़ा न होता,
बड़ा होता इन्सान यहाँ।
जो आँसू पढ़ ले आँखों के
वही असली भगवान यहाँ।

चलो मोहब्बत बोते है हम
नफरत खुद मर जाएगी।
जब रोटी सबमें बँटने लगे,
तब दुनिया सुंदर कहलाएगी।

शिवांग शर्मा
डीएलएड 2025

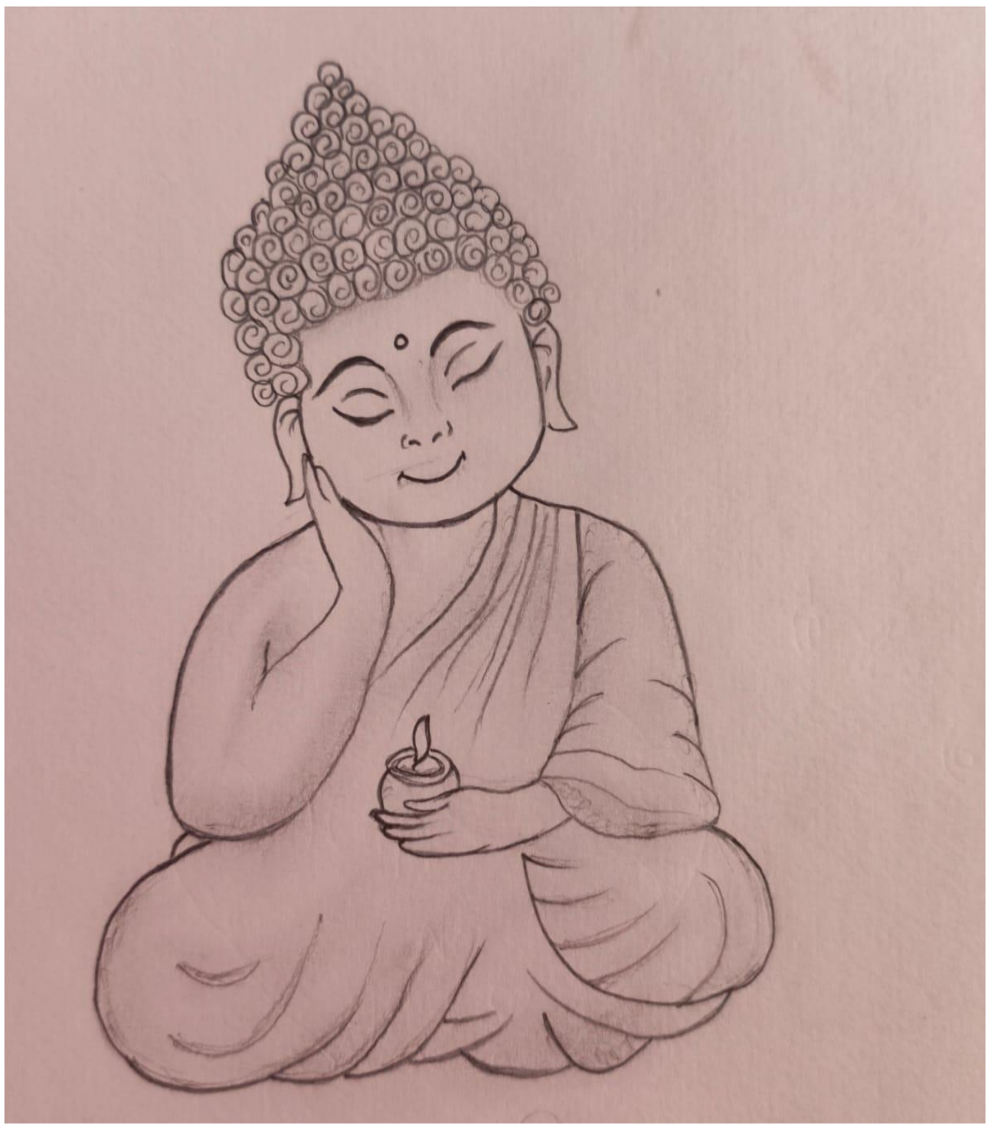

अनुज सिंह
डीएलएड 2025

एक नज़र

करेंट अफेयर्स

पहला अंतरराष्ट्रीय आईबीसीए (IBCA)शिखर सम्मेलन2026

पहले आईबीसीए शिखर सम्मेलन का आयोजन 1 जून 2026 को भारत मंडपम, नई दिल्ली में किया जाएगा। इसका प्रमुख उद्देश्य बड़ी बिल्लियों के संरक्षण में वैश्विक सहयोग को मजबूत करना तथा पर्यावरण संरक्षण में सामुदायिक भागीदारी को बढ़ावा देना है।

प्र0: क्या आप जानते हैं?

प्रोजेक्ट टाइगर की शुरुआत 1 अप्रैल 1973 को जिम कॉर्बेट राष्ट्रीय उद्यान नैनीताल, उत्तराखंड से की गई थी।

असम राज्य में समान नागरिक संहिता बिल पारित- देश का तीसरा राज्य बना

असम समान नागरिक संहिता लागू करने वाला पूर्वोत्तर का पहला तथा देश का तीसरा राज्य बन गया है इससे पहले उत्तराखंड, देश में UCC लागू करने वाला पहला तथा गुजरात दूसरा राज्य है।

प्र0: क्या आप जानते हैं?

स्वतंत्रता से पूर्व गोवा ऐसा राज्य था जहां UCC लागू था। इस कानून को पुर्तगाली सरकार द्वारा पुर्तगाली सिविल संहिता 1867 के तहत पारित किया गया था।

डिजिटल दुनिया और खोता जा रहा वास्तविक सुकून

आज की सुबह कल जैसी ही थी। आँख खुलते ही जो पहला काम मैंने किया, वह था अपने तकिए के नीचे से फोन निकालना और नोटिफिकेशन स्क्रॉल करना। किसी अनजान व्यक्ति की वेकेशन (छुट्टियों) की तस्वीरें देखना, रील्स स्क्रॉल करना और फिर एक ठंडी सांस लेकर बिस्तर से उठ जाना। क्या यह सिर्फ मेरी कहानी है ? नहीं, आज की पूरी युवा पीढ़ी इसी चक्रव्यूह में फंसी है। हम एक ऐसे दौर में जी रहे हैं जहाँ हमारे पास 'फ्रेंड्स' की लिस्ट तो बहुत लंबी है, लेकिन जब दिल की बात कहनी हो, तो हम अक्सर खुद को अकेला पाते हैं। सोशल मीडिया ने हमें पूरी दुनिया से तो जोड़ दिया, लेकिन खुद से और अपने आस-पास के लोगों से दूर कर दिया।

‘लाइफ’ की दौड़ और मानसिक सुकून:

कॉलेज लाइफ जो कभी दोस्तों के साथ कैंटीन में बैठकर घंटों ठहाके लगाने, बिना किसी फिल्टर के खुलकर बात करने का नाम थी, अब वह 'परफेक्ट सेल्फी' और 'स्टेटस अपडेट' तक सिमटती जा रही है। हम जिंदगी जीने से ज्यादा, उसे कैमरे में कैद करने में लगे हैं। किसी कैफ़े में बैठकर कॉफी का स्वाद लेने से ज्यादा जरूरी यह हो गया है कि उसकी तस्वीर सोशल मीडिया पर कितनी अच्छी दिखेंगी।

इस आभासी (virtual) दुनिया ने हमारे अंदर एक अजीब सी होड़ पैदा कर दी है। दूसरों की 'परफेक्ट' जिंदगी देखकर हम अपनी साधारण लेकिन खूबसूरत जिंदगी से निराश होने लगते हैं।

वास्तविकता की ओर एक कदम:

लेकिन क्या इसका समाधान तकनीक को छोड़ देना है? बिलकुल नहीं। समाधान है-संतुलन (Balance) |

हमें यह समझना होगा कि स्क्रीन पर दिखने वाली हर चीज सच नहीं होती। असली सुकून फोन को कुछ देर के लिए 'साइलेंट' करने पर मिलता है। असली खुशी दोस्तों के साथ बैठकर बिना फोन छुए की गई बातचीत में है। असली संतुष्टि किसी किताब के पन्नों को पलटने या शाम को ढलते सूरज को बस यूं ही देखने में है।

निष्कर्ष:

कॉलेज के दिन हमारी जिंदगी के सबसे खूबसूरत दिन होते हैं। यह समय खुद को तलाशने का है, न कि स्क्रीन में खो जाने का। आइए, आज से एक छोटी सी शुरुआत करें। जब अगली बार हम दोस्तों के साथ बैठें, तो फोन जेब में हो और हमारी नजरें एक-दूसरे के चेहरों पर। डिजिटल होना अच्छा है, लेकिन 'इंसान' बने रहना और वास्तविक जीवन को महसूस करना उससे कहीं ज्यादा जरूरी है।

आदर्श शर्मा, डीएलएड 2025

एक फ्रेम, दो दुनिया: एमराल्ड ग्रीन खुरपाताल और कालाढूंगी का विस्तार -- नैनीताल जिले में समुद्र तल से लगभग 1,635 मीटर की ऊंचाई पर स्थित **खुरपाताल झील** अपने गहरे पन्ना हरे (Emerald Green) रंग के लिए जानी जाती है। घने बादलों के बीच से इसका विशिष्ट आकार साफ दिखाई देता है, जो किसी 'खुरपे' (पारंपरिक कृषि औजार) या घोड़े के खुर जैसा लगता है और यही इसके नाम का आधार भी है। यहाँ का एक दिलचस्प अनुभव यह है कि हर मौसम में इस झील का पानी छूने पर सुखद गर्माहट का अहसास कराता है। वैज्ञानिक रूप से यह कोई हॉट-स्प्रिंग नहीं, बल्कि पानी के तापमान के सापेक्ष अंतर (थर्मल इनर्शिया) और भूमिगत स्रोतों का प्रभाव है, जो जादुई सा महसूस होता है। इस परिदृश्य का सबसे खूबसूरत पहलू इसकी भौगोलिक पृष्ठभूमि है, जहाँ पहाड़ों के ठीक पार नीचे तराई में बसा **कालाढूंगी क्षेत्र** साफ नजर आता है। पहाड़ की इस शांत झील और मैदानों के सुदूर विस्तार का एक ही फ्रेम में समाना, पहाड़ों की खामोशी और मैदानी क्षितिज के बीच एक खूबसूरत संवाद जैसा लगता है।

फोटोग्राफी व लेख कविता सिंह, डीएलएड 2025

एक नजर

करेंट अफेयर्स

भारत का पहला वाणिज्यिक सी प्लेन परीक्षण सफल

भारत नागरिक उड्डयन और क्षेत्रीय संपर्क द्वारा कोच्चि और लक्षद्वीप के बीच पहला सीप्लेन परीक्षण सफलतापूर्वक संपन्न हुआ। यह प्रशिक्षण स्काईहॉप द्वारा संचालित DHC6-400 ट्विन ऑटर विमान का प्रयोग करके किया गया।

क्या आप जानते हैं?

लक्षद्वीप का पुराना नाम मिनिकॉय था। 1 नवंबर 1973 से इसका नाम बदलकर लक्षद्वीप रखा गया।

अगले अंक हेतु आमंत्रण

प्रिय पाठकगण,

DIET मासिक बुलेटिन के आगामी अंक के लिए आपकी रचनाओं एवं योगदानों का स्वागत है। आप अपने लेख, कविता, लघु कहानी, अनुभव, पुस्तक समीक्षा, शैक्षिक विचार, नवाचार, चित्रकला, फोटोग्राफ तथा संस्थान की गतिविधियों से संबंधित सामग्री भेज सकते हैं। चयनित प्रविष्टियों को अगले अंक में प्रकाशित किया जाएगा। अपनी प्रविष्टियाँ निर्धारित तिथि तक संपादकीय दल को उपलब्ध कराना सुनिश्चित करें।
आइए, अपने विचारों, रचनात्मकता और नवाचारों को साझा करें तथा इस बुलेटिन को ज्ञान, शिक्षा, नवाचार और प्रेरणा का सशक्त मंच बनाएं।

संपादकीय मंडल
DIET मासिक बुलेटिन

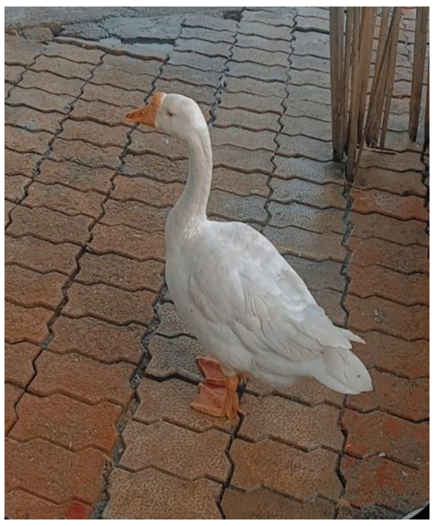

सौजन्य से हिमानी, डीएलडल 2025

सौजन्य से अरबाब रजा खां, डीएलएड 2025

सौजन्य से शाहनूर, डीएलएड 2025

आप भी प्रकृति प्रेमी है और आप के पास भी प्रकृति की सुन्दर तस्वीर है तो हमारी टीम के पास भेज सकते है।

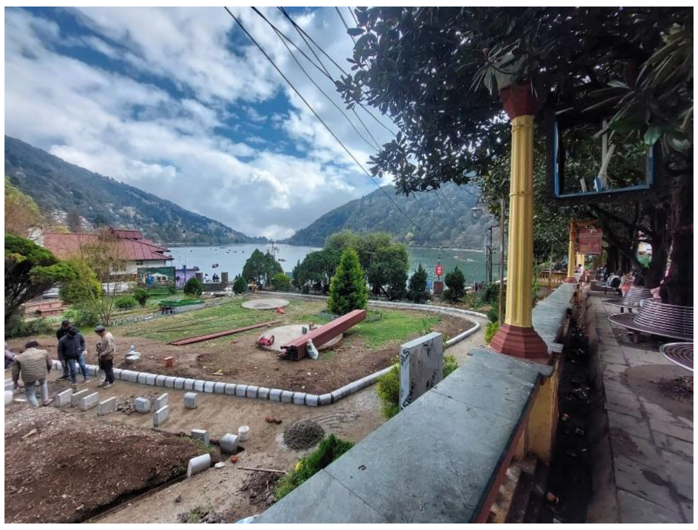

सौजन्य से आयुषी, डीएलएड 2025

सौजन्य से कविता सिंह, डीएलएड 2025

स्पोर्ट्स

नए सेशन की नई शुरुआत: Welcome to the First Edition!

हमारे मंथली बुलेटिन के इस पहले एडिशन में आप सभी का स्वागत है! हमारे इस "Educational Trivia" कॉलम का मकसद सिर्फ नॉलेज बढ़ाना नहीं, बल्कि आपके रूटीन कॉलेज डेज़ में थोड़ा फन, सस्पेंस और दिमागी कसरत जोड़ना है। हर महीने हम यहाँ आपके लिए लाएंगे मज़ेदार पहेलियाँ, अजब-गज़ब फैक्ट्स और पूरे कॉलेज को जोड़े रखने वाले कुछ सीक्रेट टास्क। तो चलिए, इस सफर की शुरुआत करते हैं हमारे सबसे एक्साइटिंग सेगमेंट से!

मनो-मंथन: The Mind Lab

ROUND 1: आउट ऑफ द बॉक्स

क्या आप रूढ़िवादी सोच से हटकर कुछ अलग सोच सकते हैं? चलिए, इस पहले एडिशन के सबसे बड़े ताले को अपनी बुद्धिमानी से खोलकर दिखाइए:

सवाल: "मूढ़ (मूर्ख) व्यक्ति के दिमाग की चाबी क्या है?"

(संकेत: इसका उत्तर किसी भौतिक वस्तु में नहीं, बल्कि इंसान के व्यवहार और उसकी वाणी में छिपा है!)

ROUND 2: ज्ञान-चक्रव्यूह

इस महीने का विशेष विषय: बाल विकास एवं अधिगम

एक कुशल भावी शिक्षक वही है जिसकी मनोवैज्ञानिक और विषयगत समझ अचूक हो। इस महीने के विशेष विषय 'बाल विकास' की तैयारी को परखिए और नीचे दिए गए 4 प्रश्नों के सही उत्तर दीजिए:

प्रश्न 1 : महान मनोवैज्ञानिक इवान पावलाव ने सीखने का कौन सा प्रसिद्ध सिद्धान्त प्रतिपादित किया है?

प्रश्न 2 : मनोविज्ञान की भाषा में 'अवधान' (Attention) का वास्तविक अर्थ क्या है?

प्रश्न 3 : निम्नलिखित में से किस मनोवैज्ञानिक ने 'कबूतर' पर अपना प्रसिद्ध प्रयोग किया था?

(अ) स्किनर

(ब) पावलाव

(स) थार्नडाइक

(द) इनमें से कोई नहीं

प्रश्न 4 : सेफेलोकोडल नियम के अनुसार, बच्चे का शारीरिक और गामक (मोटर) विकास किस दिशा में शुरू होता है?

(अ) विकास दाईं से बाईं ओर की तरफ

(ब) पैर से सिर की तरफ

(स) बाईं से दाईं ओर की तरफ

(द) सिर से पैर की तरफ

♂ कैम्पस डिक्टिव: माइक के पीछे छुपा चेहरा!

The Profile File: #001

नियम एवं निर्देश:

नीचे दिए गए तीन संकेतों को ध्यान से पढ़ें और अंदाज़ा लगाएं कि यह भारत की कौन सी महान हस्ती हैं। अपना सही उत्तर नीचे दिए गए लिंक/क्यूआर कोड (QR Code) के माध्यम से फॉर्म भरकर सबमिट करें। सबसे पहले सही जवाब देने वाले 3 विजेताओं के नाम अगले अंक में प्रकाशित किए जाएंगे!

- आपके लिए संकेत (Clues):

संकेत 1 : मुझे आधुनिक भारत की पहली महिला शिक्षिका (First Female Teacher) होने का गौरव प्राप्त है। मैंने अपना पूरा जीवन महिलाओं और समाज के वंचित वर्ग को शिक्षित करने में समर्पित कर दिया।

संकेत 2: साल 1848 में पुणे (महाराष्ट्र) में मैंने अपने पति के साथ मिलकर लड़कियों के लिए भारत के पहले स्वदेशी स्कूल की स्थापना की थी।

संकेत 3 : जब मैं लड़कियों को पढ़ाने के लिए घर से निकलती थी, तो रूढ़िवादी लोग मुझ पर पत्थर, गोबर और कीचड़ फेंकते थे। इस वजह से मैं अपने थैले में हमेशा एक अतिरिक्त (extra) साड़ी लेकर चलती थी, ताकि स्कूल पहुँचकर उसे बदल सकूं।

जवाब कैसे दें? (Scan & Win!)

पर्ची पर नाम लिखकर जमा करने का पुराना तरीका अब भूल जाइए! हम लेकर आए हैं डिजिटल ट्विस्ट:

1. नीचे दिए गए QR Code को अपने फोन से स्कैन करें।
2. गूगल फॉर्म में अपना नाम फिल करें।
3. अपना सही उत्तर लिखकर सबमिट कर दें !

अपना बरेली

फरीदपुर, बरेली। मई 2026

पांचाल संग्रहालय–बरेली

स्थापना वर्ष: 2004 ई.

स्थान: महात्मा ज्योतिबा फुले रोहिलखंड विश्वविद्यालय, दोहरा रोड, बरेली, उत्तर प्रदेश।

- पंचाल संग्रहालय बरेली का एक प्रसिद्ध पुरातात्विक संग्रहालय है। यह महात्मा ज्योतिबा फुले रोहिलखंड विश्वविद्यालय के प्राचीन इतिहास एवं संस्कृति विभाग के अंतर्गत संचालित होता है। इस संग्रहालय का नाम प्राचीन पंचाल राज्य के नाम पर रखा गया है, जिसका संबंध महाभारत काल से माना जाता है।
- संग्रहालय में प्राचीन सिक्के, मिट्टी के बर्तन, टेराकोटा मूर्तियाँ, मनके तथा अनेक ऐतिहासिक वस्तुएँ सुरक्षित रखी गई हैं। यहाँ रखे गए पुरावशेष रोहिलखंड क्षेत्र की प्राचीन सभ्यता, संस्कृति और इतिहास की झलक प्रस्तुत करते हैं।
- यह संग्रहालय विद्यार्थियों, शोधकर्ताओं तथा इतिहास प्रेमियों के लिए ज्ञान का महत्वपूर्ण केंद्र है। रोहिलखंड की ऐतिहासिक धरोहरों के संरक्षण और अध्ययन में पंचाल संग्रहालय की महत्वपूर्ण भूमिका है। यह बरेली की सांस्कृतिक पहचान को सुरक्षित रखने का कार्य करता है।

तय्यबा, डीएलएड 2025

दरगाह आला हजरज–बरेली

स्थापना वर्ष: 1921 ई.

स्थान: सौदागरान मोहल्ला, बरेली, उत्तर प्रदेश।

आला हज़रत दरगाह बरेली की एक प्रसिद्ध धार्मिक एवं ऐतिहासिक धरोहर है। आला हज़रत इमाम अहमद रज़ा ख़ान बरेलवी एक महान इस्लामी विद्वान, लेखक, शायर और समाज सुधारक थे। उनकी नातिया शायरी आज भी पूरी दुनिया में पढ़ी और गाई जाती है।

यह इमाम अहमद रज़ा खान बरेलवी की मजार है। उनकी शिक्षा, लेखन और धार्मिक सेवाओं के कारण उन्हें "आला हज़रत" की उपाधि दी गई थी।

दरगाह अपनी सुंदर वास्तुकला, विशाल गुंबद और ऊँची मीनारों के लिए प्रसिद्ध है। यहाँ देश-विदेश से हजारों श्रद्धालु और जायरीन आते हैं। हर वर्ष उर्स-ए-रज़वी के अवसर पर विशेष कार्यक्रम आयोजित किए जाते हैं।

आला हज़रत ने समाज में शिक्षा, धार्मिक ज्ञान और इंसानियत का संदेश फैलाया। यह दरगाह आज भी लोगों के लिए आस्था, शांति और आध्यात्मिक प्रेरणा का केंद्र बनी हुई है।

आला हज़रत का एक मशहूर शेर

"उनकी महक ने दिल के गुंचे खिला दिए हैं,
जिस राह चल दिए हैं कूचे बसा दिए हैं।"

तय्यबा, डीएलएड 2025

बरेली–ऐतिहासिक स्थल: अहिच्छत्र

बरेली, विशेष रूप से यहाँ स्थित अहिच्छत्र (आँवला तहसील के रामनगर के पास), प्राचीन काल से ही हिंदू, जैन और बौद्ध धर्म का एक प्रमुख और ऐतिहासिक केंद्र रहा है।

इन तीनों धर्मों से बरेली का गहरा संबंध निम्नलिखित रूप में है:

1. जैन धर्म (Jainism): अहिच्छत्र और पार्श्वनाथ:जैन धर्म के अनुसार, यह स्थान अत्यंत पवित्र है क्योंकि यहाँ सभी २४ तीर्थंकरों ने भ्रमण किया था। यहीं पर जैन धर्म के २३वें तीर्थंकर भगवान पार्श्वनाथ ने कठोर तपस्या की थी और उन्हें कैवल्य (ज्ञान) की प्राप्ति हुई थी। माना जाता है कि तपस्या के दौरान सर्पराज ने उनके ऊपर अपने फन की छतरी बनाकर रक्षा की थी, जिसके कारण इस जगह का नाम 'अहिच्छत्र' (अहि = सांप, छत्र = छतरी) पड़ा। यह जैनियों के लिए एक मुख्य तीर्थ स्थल है।

2. हिंदू धर्म (Hinduism): महाभारत काल: बरेली का क्षेत्र प्राचीन काल में पांचाल राज्य के नाम से जाना जाता था। यह ऐतिहासिक रूप से पांचाल नरेश राजा द्रुपद की राजधानी और द्रौपदी (पांचाली)का जन्मस्थान माना जाता है।

3. बौद्ध धर्म (Buddhism): बुद्ध का आगमन: बौद्ध ग्रंथों के अनुसार, भगवान गौतम बुद्ध स्वयं प्राचीन नगरी अहिच्छत्र (सांजश्य) में आए थे और यहाँ उन्होंने धर्मोपदेश दिए थे।

ऐतिहासिक प्रमाण: चीनी यात्री ह्वेनत्सांग (Hiuen Tsang) ने भी अपनी यात्रा के दौरान इस क्षेत्र का दौरा किया था और यहाँ कई बौद्ध स्तूपों और विहारों के होने का उल्लेख किया था।

हिमानी, डीएलएड 2025

डाएट बुलेटिन

बुलेटिन टीम

- **मुख्य संरक्षक:**
  श्री पार्थ सारथी सेन शर्मा, अपर मुख्य सचिव, वित्त, माध्यमिक शिक्षा एवं बेसिक शिक्षा, उत्तर प्रदेश शासन, लखनऊ।
- **प्रेरणा:**
  श्रीमती मोनिका रानी, महानिदेशक, स्कूल शिक्षा / राज्य परियोजना निदेशक, समग्र शिक्षा, उत्तर प्रदेश, लखनऊ।
- **मार्गदर्शन:**
  श्री गणेश कुमार, निदेशक, राज्य शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद, उत्तर प्रदेश, लखनऊ।
- **संकल्पना:**
  डॉ० पवन कुमार, संयुक्त निदेशक (एस०एस०ए०), राज्य शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद, उत्तर प्रदेश, लखनऊ।
- **निर्देशन:**
  श्रीमती दीप्ति वार्ष्णेय, प्राचार्य, ज़िला शिक्षा एवं प्रशिक्षण संस्थान, फरीदपुर, बरेली।
- **सहयोग:**
  श्री मनोज कुमार, वरिष्ठ प्रवक्ता, ज़िला शिक्षा एवं प्रशिक्षण संस्थान, फरीदपुर, बरेली।
- **संपादक एवं समन्वय:**
  डॉ फ़हमिना, प्रवक्ता, ज़िला शिक्षा एवं प्रशिक्षण संस्थान, फरीदपुर, बरेली।
- **संपादकीय मंडल–**
  श्री कृष्ण कुमार, प्रवक्ता, जिला शिक्षा एवं प्रशिक्षण संस्थान, बरेली।
  श्रीमती अर्चना, प्रवक्ता, जिला शिक्षा एवं प्रशिक्षण संस्थान, बरेली।
  श्री श्रीकान्त मिश्रा, प्रवक्ता, जिला शिक्षा एवं प्रशिक्षण संस्थान, बरेली।
  डॉ0 रूबी, प्रवक्ता, जिला शिक्षा एवं प्रशिक्षण संस्थान, बरेली।
  श्रीमती वंदना सहाय , प्रवक्ता, जिला शिक्षा एवं प्रशिक्षण संस्थान, बरेली।
- **कंप्यूटर ले–आउट एवं डि़जाइनिंग–**

अरबाब रजा खां, प्रशिक्षु, जिला शिक्षा एवं प्रशिक्षण संस्थान, बरेली।

- **प्रशिक्षु संपादकीय मंडल (डायट) –**

मो सादान

शिवंम

कृतिका तिवारी

कविता सिंह

अनुज सिंह

आदर्श शर्मा

हिमानी

शिवांग शर्मा

सानिया अंसारी

तय्यबा

विशाखा

गुरजीत सिंह

शाहनूर

आयुषी

अन्शु

गुनगुन

सताक्षी गंगवार

रानी यादव

खुशी

अंजुम बी

इम्तेयाज अहमद

अनु तोमर